4

दृश्य कला चित्रों की मनोविश्लेषणात्मक समीक्षा

*प्रतिभा**

कला मानवीय भावनाओं के विरेचन का एक अच्छा माध्यम है, इसके द्वारा कलाकार को एक आनंदानुभूति होती है जो कि भौतिक ऊर्जा प्रक्रिया का फल है। कला के इस नूतन महत्व को फ्रायड ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसके व्यक्तिगत मानसिक भावों से जोड़कर प्रस्तुत किया तथा मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के आधार पर अनेक कलाकारों के कला चित्रों का विश्लेषण किया है।

प्रस्तुत लेख के अंतर्गत मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा के आधार पर कलाक्षेत्र में प्रसिद्ध कलाकारों यथा लियोनार्डो द विंसी, वानगो आदि के कला चित्रों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। कला के मूल में दमित भावनाएँ होती हैं। इसी को उदाहरणों द्वारा सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि मनुष्य के चेतन और अचेतन मन के द्वंद्वों तथा दमित प्रवृत्तियों में शक्ति के उदात्तीकरण तथा नाना सृजन करने की क्षमता होती है और यही अचेतन द्वंद्व तथा दमित प्रवृत्तियाँ कलाकारों के चित्रों में झलकती हैं। प्रस्तुत विश्लेषणात्मक अध्ययन न केवल अचेतन द्वंद्वों एवं दमित प्रवृत्तियों के अस्तित्व को प्रस्तुत करता है, बल्कि प्रसिद्ध कलाकारों के विचार, द्वंद्व, दमित भावनाओं को उनकी कला के माध्यम से समझने का अवसर भी प्रदान करता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में कला शिक्षा के महत्व को उजागर करते हुए स्पष्ट रूप से इंगित किया गया है कि 'कला के महत्व की अधिक समय तक उपेक्षा नहीं कर सकते और हमें बच्चों में कला संबंधी जागरूकता व रुचि के प्रसार-प्रोत्साहन के लिए सारे संभावित संसाधन और सारी ऊर्जा लगा देनी चाहिए। भारत कला, धर्मनिरपेक्षता और सांस्कृतिक विविधता का जीता-जागता उदाहरण है। उसमें देश के हर भाग के लोक और शास्त्रीय गायन, नृत्य, संगीत, पुतले बनाना, मिट्टी का काम आदि शामिल हैं। इनमें से किसी भी कला का अध्ययन हमारे युवा विद्यार्थियों के ज्ञान को न केवल समृद्ध करेगा, बल्कि वह स्कूल के बाहर भी जीवन भर उनके काम आएगा।

दृश्य और प्रदर्शन, दोनों ही कलाओं को पाठ्यचर्या में शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाए जाने की ज़रूरत है। बच्चे इन क्षेत्रों में केवल मनोरंजन के लिए ही कौशल हासिल न करें, बल्कि और भी दक्षताएँ विकसित करें। कला पाठ्यचर्या के द्वारा विद्यार्थियों को देश की विविध कलात्मक परंपराओं से परिचय करवाना चाहिए। कला शिक्षा आवश्यक रूप से एक उपकरण और विषय के रूप में शिक्षा का हिस्सा (कक्षा 10 तक) हो और हर स्कूल में इससे

*302, वृन्दावन, ग्रीन अपार्टमेंट, जी.टी. रोड, साहिबाबाद, गाज़ियाबाद 201005

संबंधित सुविधाएँ हों। कला के अंतर्गत – संगीत, नृत्य, कला और नाटक – चारों को शामिल किया जाना चाहिए। कला के महत्व के संबंध में अभिभावकों, स्कूल अधिकारियों और प्रशासकों को अवगत कराए जाने की ज़रूरत है। कला शिक्षण में ज़ोर सीखने पर हो, न कि सिखाने पर और यह दृश्य सहभागिता पर आधारित हो।

वस्तुत: सौंदर्य व कला के विभिन्न रूपों को समझना, उसका आनंद उठाना, मानव जीवन का अभिन्न अंग है। कला, साहित्य और ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में सृजनात्मकता का एक-दूसरे से घनिष्ठ संबंध है। बच्चे की रचनात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्यात्मक आस्वादन की क्षमता के विस्तार के लिए साधन और अवसर मुहैया कराना शिक्षा का अनिवार्य कर्तव्य है। आज जबकि बाज़ार की शक्तियों में मतों व अभिरुचियों को प्रभावित करने की गुंजाइश ज़्यादा है, सौंदर्य की समझ व रचनात्मकता के लिए शिक्षा की महत्ता और भी बढ़ गई है। विद्यार्थी को सौंदर्य के विभिन्न रूपों को समझने व उनका विवेचन करने में समर्थ बनाने का प्रयास होना चाहिए।

समीक्षात्मक रूप में देखा जाए तो सौंदर्यशास्त्र की मनोविश्लेषणात्मक परंपरा कला समीक्षा के क्षेत्र में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सौंदर्यशास्त्रियों ने कला समीक्षा के लिए अनेक दृष्टिकोण दिए। कभी उन्होंने चित्रों की समीक्षा उनके भौतिक स्वरूप या दैनिक सौंदर्य के आधार पर की, कभी उससे उत्पन्न होने वाली मानसिक प्रक्रियाओं के आधार पर इसको समझा। किंतु मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा में कलाकार की मानसिक अवस्था को ही अध्ययन का आधार बनाया गया। विद्वानों ने यह माना कि मनोवैज्ञानिक युग में चित्र देखना, समझना, अनुभव करना या आनंद प्राप्त करना, इन सभी की प्रक्रिया एक समान ही होती है अर्थात् कलाकार अपने चित्र रचना में जिस मानसिक प्रक्रिया से गुज़रता है, दर्शक भी उसी प्रक्रिया से गुज़रता है और इनका मानना है कि यदि दर्शक कलाकार के समान उस मानसिक प्रक्रिया से गुज़रेगा, तभी वह उस चित्र का यथार्थ आनंद ले पाएगा।

मनोविश्लेषणात्मक अवधारणा

सरल शब्दों में मनोविश्लेषण का अर्थ है 'मन का विश्लेषण' अर्थात् मन के विषय में जानना। मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा मनोविज्ञान की ऐसी शाखा है, जिसमें विशेषत: अंतर-दर्शन के द्वारा मानसिक प्रक्रियाओं को जानकर मन का विश्लेषण किया जाता है। मनोविज्ञान की दुनिया में मनोविश्लेषणवाद का उद्भव 19वीं शताब्दी में वियना के प्रसिद्ध मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉ. सिग्मंड फ्रायड के द्वारा किया गया।

फ्रायड की मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा का जन्म शरीर चिकित्साशास्त्र से हुआ और इसमें इन्होंने माना कि मानसिक वृत्तियों का प्रभाव मनुष्य के शरीर पर पड़ता है। उनका मानना था कि कलाकार की कृतियों द्वारा उसके अंतर्मन को समझा जा सकता है।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 22 5/26/2017 9:26:54 AM

दृश्य कला चित्रों की मनोविश्लेषणात्मक समीक्षा

फ्रायड के अनुसार कलाकार की कृतियों द्वारा कलाकार के अंतर्मन के रहस्यों को प्रस्तुत किया जा सकता है और कलाकार का अध्ययन करने पर उसकी मानसिक प्रक्रियाओं द्वारा उसकी कृति में निहित मनोवैज्ञानिक गहराइयों को भी समझा जा सकता है। लेकिन इसका संबंध नैतिक या सौंदर्यबोधात्मक मूल्यों से नहीं होगा। फ्रायड की विचारधारा कला के विश्लेषण में प्रस्तुत तरीकों, बिंबों, कल्पनाओं और अभिव्यंजनाओं के पीछे निहित अवचेतन, स्वप्न व प्रजातिगत स्मृतियों के ताने-बाने को सुलझाती है। इसी प्रकार कलाकार के व्यक्तित्व, अवचेतन और अंतर्जगत का उद्घाटन करके कला में उनके विभिन्न परिवर्तित स्वरूपों को स्पष्ट करना ही इसका लक्ष्य है। इस प्रकार मनोविश्लेषण का केंद्रीय उद्देश्य कलाकार अथवा पात्र के अंतर्मन में प्रवेश करना है। इसके लिए साहचर्य अथवा स्वप्न विश्लेषण आदि के द्वारा अवचेतन द्वंद्वों और ग्रंथियों को प्रकट करना आदि साधन है।

कला के क्षेत्र में फ्रायड ने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत को अधिक महत्वपूर्ण माना है और इसके आधार पर विशेष रूप से माइकल एंजेलो, लियोनार्डो, रैफ़ेल तथा बाद में डाली, वानगो व अन्य कलाकारों के चित्रों का विश्लेषण किया। फ्रायड ने कला के मूल में दमित काम प्रवृत्ति को माना है और उदाहरणों के द्वारा उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास भी किया है।

फ्रायड का मानना था कि कलाकार के जीवन में उसके अचेतन का बहुत योगदान होता है और अनेक बार कलाकार ऐसे आकारों या घटनाओं को चित्रित करता है जो उसके अचेतन में होती हैं और इसी तथ्य का विश्लेषण उन्होंने लियोनार्डो के चित्रों को देखने के बाद एवं विशेष रूप से उसके बारे में उसके समकालीन मनोवैज्ञानिकों के विचार पढ़ने के बाद तथा साथ-ही-साथ लियोनार्डो के विषय में उसकी खुद की टिप्पणियाँ पढ़ने के बाद किया। फ्रायड ने लियोनार्डो के चित्रों की नए रूप में व्याख्या की। फ्रायड ने लियोनार्डो के जीवन को आधार बनाते हुए उसके बचपन के जीवन को और उसकी बाल्यकाल की घटनाओं को अधिक महत्व दिया।

लियोनार्डो के विषय में कहा जाता है कि वह एक अवैध संतान था और उसके जन्म के बाद उसकी माँ केटरीना के पास वह पाँच वर्ष की आयु तक रहा। उस समय उसके पिता से उसका कोई संपर्क नहीं था। किंतु बाद में उसे उसके पिता ले गए और लियोनार्डो अपनी सौतेली माँ डोना अलबेरिया के साथ रहने लगा। डोना की माँ भी साथ रहती थी और इस प्रकार लियोनार्डो को बाल्यकाल में तीन महिलाओं का निकट संपर्क प्राप्त हुआ। इसके बारे में फ्रायड का मानना है कि लियोनार्डो को अपनी माँ से बहुत ज़्यादा लगाव रहा और बाद में सौतेली माँ के साथ रहने पर उसने बनावटी प्रेम का अनुभव किया। फ्रायड का मानना है कि अपने बचपन की स्मृतियों में लियोनार्डो ने अपनी दोनों माँ की मुस्कुराहट को हमेशा दिमाग में रखा। अत: इनके

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 23 5/26/2017 9:26:54 AM

अनुसार लियोनार्डो के चित्रों में चित्रित स्त्रियों की मुस्कुराहट में कुछ रहस्यों का भाव प्रस्तुत हुआ। कहीं उसकी स्त्री आकृतियाँ आत्मीयता से या सहज निश्छल रूप से मुस्कुराती महसूस होती हैं, कभी अनायास ही उनमें उदासी का अनुभव भी महसूस किया जा सकता है तथा कुछ आकृतियों में प्रयास करके मुस्कुराने का भाव भी दिखाई देता है।

लियोनार्डो के चित्रों से फ्रायड ने यह विश्लेषित करने की चेष्टा की, कि कलाकार अपने जीवन की कुछ प्रवृत्तियों को त्याग नहीं पाता है और कभी-कभी अपनी महत्वकांक्षाओं, इच्छाओं और काल्पनिक दुनिया, जिससे कि वह जुड़ा होता है, वह उसे नए तथ्य के रूप में बदलकर अपने चित्रों के द्वारा प्रस्तुत कर देता है। दूसरे शब्दों में कहें कि यदि वह अपनी इच्छाओं को दैनिक बाधाओं से दबा देता है और इसे अपने अचेतन में डाल देता है, तो कभी-कभी उसकी वे प्रवृत्तियाँ उसके अर्द्धचेतन मन से उसकी रचनात्मकता के द्वारा बाहर आती हैं और जब दर्शक इन चित्रों को देखता है तो उसके अंदर दबी हुई इच्छाएँ या स्मृतियाँ उसे दिखाई देती हैं। इस प्रकार दर्शक के मन की भावनाएँ या अर्द्धचेतन स्मृतियाँ अनायास ही उन चित्रों को देखकर प्रकट हो जाती हैं और इस अनुभव से दर्शक को आत्मिक आनंद की अनुभूति होती है।

फ्रायड के विचारों को स्पष्ट करने के लिए हम वानगो द्वारा निर्मित कृति द *पोटैटो ईटर्स (The Potato Eaters)* का भी उदाहरण ले सकते है। वानगो ने अपने जीवन काल में बहुत संघर्ष किया तथा गरीबों और मानवीय दुखों के प्रति वे अत्यधिक संवेदनशील थे। वानगो ने किसानों, मज़दूरों की दयनीय स्थिति के साथ-साथ उनकी आशा तथा कठोर कर्मसाधना को केनवास पर अभिव्यक्त किया, क्योंकि कहीं न कहीं वे अपने जीवन संघर्ष को उनके जीवन संर्घष से जोड़ते थे और उनके जीवन को माध्यम बनाकर अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करते थे, अपने चित्रों में अपने अर्द्धचेतन जगत को प्रस्तुत करते थे।

द *पोटैटो ईटर्स* कृति में पूरा दिन कठोर परिश्रम करने के बाद भी मज़दूर परिवार में एक आशा की किरण है, इस आशा की किरण को वानगो ने गहराई तक समझा और अभिव्यत किया है। अत: फ्रायड के इस मत की पुष्टि होती है कि कलाकार और उसके चित्रण में सामान्य जीवन को परिष्कृत करने की क्षमता होती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि फ्रायड ने कला के एक नए महत्व को प्रत्येक व्यक्ति के लिए उस स्तर पर प्रस्तुत किया, जिसे पहले नहीं किया गया। कला केवल दृश्य गुण की सौंदर्यात्मक प्रक्रिया ही नहीं वरन् व्यक्तिगत मानसिक भावों से भी जुड़ी होती है। अत: फ्रायड ने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के द्वारा कला क्षेत्र को एक नयी परिभाषा प्रदान की है। इस सिद्धांत के द्वारा कला जगत के नए तथ्य हमारे सामने आए तथा कलाकार और कृतियों को गहराई से समझा जा सका। इस लेख में प्रस्तुत की गई समीक्षा अपने आप में एक प्रमाण है। फिर भी अनेक विद्वान फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत से

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 24 5/26/2017 9:26:54 AM

सहमत नहीं हैं क्योंकि उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का अवलोकन या विश्लेषण अलग-अलग होता है। परंतु इन सब विवादों के बावजूद भी फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत अपना विशेष महत्व रखता है, जो कि विभिन्न चित्रों के विश्लेषण करने से स्वत: ही दृष्टिगत हो जाता है।

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यदि विद्यालयों में दृश्य कला शिक्षण की उपयोगिता का आकलन किया जाए तो यह स्पष्टत: कहा जा सकता है कि कला शिक्षण का विद्यार्थियों के जीवन में अत्यंत महत्व है। उनके द्वारा बनाए गए दृश्य कला चित्रों के माध्यम से न केवल दमित भावनाओं, अवचेतन और अचेतन मन के द्वंदों तथा दमित प्रवृत्तियों को जाना जा सकता है, बल्कि उनके संपूर्ण व्यक्तित्व को समझा जा सकता है। जिसके फलस्वरूप शैक्षिक क्रियाकलापों को नव आयाम प्रदान कर विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण का बीजारोपण किया जा सकता है। निष्कर्षत: यह कहना उचित ही होगा कि दृश्य कला चित्रों की मनोविश्लेषणात्मक समीक्षा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकती है, जिसकी वर्तमान में महती आवश्यकता है।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 25 5/26/2017 9:26:54 AM